26.06.2025

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
मीडिया और जन-संपर्क शाखा
द्वारका, नई दिल्ली

हिंदी कार्यक्रम - "अभिव्यक्ति"

राजभाषा प्रोत्साहन गतिविधियों के हिस्से के रूप में "मीडिया और जन-संपर्क शाखा द्वारा 26 जून 2025 को **"अभिव्यक्ति"** कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह गतिविधि श्रीमती निति शंकर शर्मा, उप सचिव और श्रीमती रेनू भंडारी, सहायक सचिव के पर्यवेक्षण में आयोजित हुई।

कार्यक्रम की शुरुआत में श्रीमती निति शंकर शर्मा, उप सचिव ने कार्यक्रम की विषय-वस्तु के अनुसार भावों की "अभिव्यक्ति" की सार्थकता और शैली के महत्व पर प्रकाश डाला'। उन्होंने कहा कि

"अभिव्यक्ति सिर्फ़ शब्दों की साज-सज्जा नहीं है, यह वह पुल है जो हमें दूसरों से जोड़ता है, जो हमारे अस्तित्व को अर्थ देता है। जहाँ आज संवाद का स्थान शोर ने ले लिया है, वहीं ऐसे क्षणों की आवश्यकता है जहाँ सच्ची और संवेदनशील अभिव्यक्ति को स्थान मिले।"

उन्होंने सभी प्रतिभागियों से संगत विषयों पर हिंदी में अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित किया।

इस कार्यक्रम में अधिकारी/कर्मचारीगण द्वारा निम्न अनुसार प्रस्तुतियाँ दी गईं:-

श्रीमती नेहा खेड़ा निजी सहायक ने हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा दिनांक 17.06.2025 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में भाग लिया था। उन्होंने हिंदी कार्यशाला में दी गई जानकारी पर चर्चा करते हुए प्रशासनिक शब्दों,वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों की विशेषताओं और इनके कार्यालय में प्रयोग की जानकारी दी। उन्होंने दिन-प्रतिदिन कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले 25 पारिभाषिक शब्दों/शब्दावली (प्रशासनिक) के बारे में बताया जो इस प्रकार हैं:

- As per rules – नियमों के अनुसार
- Under consideration – विचाराधीन
- With immediate effect – तत्काल प्रभाव से
- In compliance with – के अनुपालन में
- Necessary action – आवश्यक कार्रवाई
- Subject to approval –अनुमोदन के अधीन
- Strict compliance – कड़ाई से अनुपालन
- Due to unavoidable reasons – अपरिहार्य कारणों से
- In this regard – इस संबंध में
- Under the provisions – प्रावधानों के अंतर्गत
- In the interest of work – कार्यहित में
- Vide letter dated – पत्र दिनांक के माध्यम से
- Until further orders – अगले आदेश तक
- On priority basis – प्राथमिकता के आधार पर
- As instructed – निर्देशानुसार/अनुदेशानुसार
- For necessary information – आवश्यक जानकारी हेतु

- As discussed – चर्चा अनुसार
- In view of – के दृष्टिगत
- For immediate action – त्वरित कार्रवाई हेतु
- Matter of urgency – आपातकालीन विषय
- Kindly expedite – कृपया शीघ्रता करें
- Administrative approval – प्रशासनिक अनुमोदन
- Financial sanction – वित्तीय संस्वीकृति
- Mutual consent – आपसी सहमति
- Office memorandum – कार्यालय ज्ञापन

निष्कर्ष

1. प्रशासनिक भाषा में सटीकता एवं स्पष्टता अनिवार्य है।
2. इन शब्दों/वाक्यांशों का नियमित अभ्यास आवश्यक है।

उन्होंने पारिभाषिक शब्दावलियों के ऑनलाइन उपलब्ध संसाधनों shabd.education.gov.in तथा cstt.education.gov.in के बारे में भी बताया।

इस क्रम में श्रीमती मीनाक्षी, अधीक्षक, ने व्याकरण के महत्त्वपूर्ण पहलू "विराम चिह्न" पर आधारित एक शिक्षाप्रद और रोचक कविता का पाठ किया।

'विराम चिह्न'

भाषा को जीवंत बनाता, 'विराम चिह्न' का ज्ञान
भाव अधिक स्पष्ट रूप में प्रकट करें विद्वान

जब होता है अंत वाक्य का, लगता 'पूर्ण विराम' (।)
अगर वाक्य में रुकते थोड़ा, आता 'अल्प विराम' (,)
अधिक देर तक रुके बीच में, लगता 'अर्ध विराम' (;)
भ्रमित नहीं हो जाना सुनकर मिलते-जुलते नाम

'प्रश्नवाचक चिह्न' लगे, जब प्रश्न पूछा वाक्य (?)
'विस्मयादिबोधक' हो, जब अचरज आदि भाव (!)

साथ-साथ के शब्द जोड़ता, 'शब्द योजक चिह्न' (-)
कथन-पूर्व, वक्ता के आगे लगता 'निर्देश चिह्न' (:)

शब्द-विशेष दिखाता चिह्न, इकहरा अवतरण ('...')
ज्यों की त्यों हो बात बतानी, 'चिह्न उद्धरण' ("...")

अगर करें अभ्यास ध्यान से, असरदार हो भाषा
सदा शुद्ध हो लेखन-वाचन, विद्वानों से आशा

(रचनाकार: प्रशांत अग्रवाल, स०अ० प्रा वि डहिया, बरेली)

श्री आशीष कुमार कनिष्ठ सहायक ने "कौन हूँ मैं"" कविता सुनाई जो आत्म-चिंतन करते व्यक्ति की आंतरिक दुविधा, खोज और अपने अस्तित्व को जानने की जिज्ञासा को दर्शाती है।

कौन हूँ मैं
कभी लगता है शोर हूँ मैं
कभी लगता है मौन हूँ मैं
ये समझ नहीं आ रहा आखिर कौन हूँ मैं...
कभी लगता है मुस्कुराहट हूँ मैं
कभी लगता है घबराहट हूँ मैं
खुद को रोज़ टटोलूं, आखिर कौन हूँ मैं...
कभी लगता है मंज़िल को पाने की राह हूँ मैं
कभी लगता हूँ आसमान को छूने की चाह हूँ मैं...

श्रीमती कीर्ति शर्मा, निजी सचिव ने “संघर्ष की आग” शीर्षक से प्रेरणा, संकल्प और धैर्य का आह्वान करने वाली कविता सुनाई, कुछ अंश:

चल पड़े हैं तो चलने दो,
रास्तों को खुद बदलने दो।
हर कदम पे मुश्किलें आएंगी,
उन्हें भी हौसले से जलने दो।
कोई कहेगा—"तू नहीं कर सकता→,
कोई हंसेगा, कोई डर भी दिखाएगा।
पर तू मत रुकना, मत थमना,
हर मज़ाक एक दिन ताली में बदल जाएगा।

श्रीमती रेनु भंडारी, सहायक सचिव ने संवेदनशीलता और मानवीय रिश्तों की ऊष्मा को स्पर्श करती एक कविता इस प्रकार से प्रस्तुत की:

किसी गिरते को उठाएं तो कोई बात बने
और रोते को हँसाए तो कोई बात बने
हंस के खुशियों में तो हो जाती है दुनिया शामिल
काम दु:ख दर्द में आए तो कोई बात बने
प्यार अपनो से तो हर कोई निभा लेता है
प्यार गैरों से निभाए तो कोई बात बने
कांटे राहों में बिछाना तो बड़ी बात नहीं
फूल राहों में बिछाएं तो कोई बात बने
किसी गिरते को उठाएं तो कोई बात बने

श्री गोविंद शर्मा, अनुभाग अधिकारी ने अपनी स्व-रचित कविता प्रस्तुत की जो सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध संघर्ष के शंखनाद के रूप में मनुष्य को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने का संदेश देती है। काव्यांश:

अंधेरा हो रहा है आसमान रो रहा है
सूरज छिप गया है बैचेनी बढ़ गई है
भ्रष्ट होता मन, समाज गिर रहा है
वैमनस्य हँस रहा है, व्यक्तित्व मर रहा है
हंस रो रहा है काक गा रहा है
नीति नहीं कूटनीति का राज हो रहा है...

युद्धघोष कर दो अब,शंखनाद बजा दो
अस्तित्व खो रहा मानव को जगा दो
पवन का वेग बन , काली घटा को भगा
सिंह की गर्जना, पहाड़ को थर थरा...
छटेगा अँधेरा, बन सूरज का उजयाला
होगा अंत, मिटेगी कुरीति कुचाला

सुश्री आइरिन खोसला, परामर्शदाता (काउंसलिंग) ने मधुरता, दया, सौहार्द और जीवन की बुनियादी सुंदरता को उजागर करती कविता का पाठ किया:-

छोटी-सी एक मुस्कान से,
दिन किसी का बन जाता है।
थोड़ा सा अपनापन देकर,
मन सुकून को पाता है।
शद्ब अगर हों मीठे अपने,
रिश्ता गहरा बन जाता है।
दया, करुणा, समझदारी से,
हर दिल जीत लिया जाता है।
दुनिया बदलने की चाह नहीं,
बस खुद में थोड़ा बदल जाएं।
काम में हो इंसानियत भी,
तो ऊंचाइयों को हम छू जाएं।

श्री देवेन्द्र, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने महान तमिल साहित्यकारों में से एक चिन्नास्वामी सुब्रह्मण्यम भारती का जीवन परिचय दिया और महाकवि भारती की राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कविता “यह है भारत देश हमारा” (मूल तमिल से अनुवाद (कृष्णा की सहायता से): अनिल जनविजय) का पाठ किया।कुछ अंश:

सम्मानित जो सकल विश्व में, महिमा जिनकी बहुत रही है
अमर ग्रन्थ वे सभी हमारे, उपनिषदों का देश यही है।
गाएँगे यश हम सब इसका, यह है स्वर्णिम देश हमारा,
आगे कौन जगत में हमसे, यह है भारत देश हमारा।

यह है देश हमारा भारत, पूर्ण ज्ञान का शुभ्र निकेतन,
यह है देश जहाँ पर बरसी, बुद्धदेव की करुणा चेतन,
है महान, अति भव्य पुरातन, गूँजेगा यह गान हमारा,
है क्या हम-सा कोई जग में, यह है भारत देश हमारा।

श्री सुरेन्द्र कुमार, एमटीएस ने ईश्वर में आस्था रखने की विषय-वस्तु पर एक बेहतरीन कहानी सुनाई, वहीं श्री राजेंद्र जी ने नसीहत देती यह कविता सुनाई:-

मिट्टी से भी यारी रख,
दिल से दिलदारी रख।
चोट न पहुंचे बातों से,
इतनी समझदारी रख।
पहचान हो तेरी हटकर,

भीड़ में कलाकारी रख।
पलभर ये जोश जवानी का,
बुढापे की तैयारी रख।
दिल सबसे मिलता नहीं,
फिर भी जुबान प्यारी रख।

श्री अमन, एमटीए ने अर्पित खन्ना की बच्चों और बड़ों दोनों के लिए प्रेरणास्रोत निम्न कविता सुनाई जो प्रकृति के सौंदर्य को दर्शाती है और कर्मठता का संदेश देती है:-

सुबह

गरम गरम लड्डू सा सूरज
लिपटा बैठा लाली में
सुबह सुबह रख आया कौन
इसे आसमान की थाली में

मूंदी आँख खोली कलियों ने
चिड़ियों ने गाया गाना
गुन गुन करते भौरों ने
खिलते फूलों को पहचाना

तभी आ गई फड़क फड़क कर
एक तितलियों की टोली
मधुमक्खियों ने मधु रस लेकर
भर डाली अपनी झोली

उठो उठो हम लगे काम पर
तब आगे बढ़ पाएंगे
वे क्या पाएंगे जीवन में
जो सोते रह जाएंगे

श्रीमती निति शंकर शर्मा, उप सचिव महोदया ने सभी प्रस्तुतकर्ताओं की सराहना करते हुए कर्मचारियों को नियमित रूप से हिंदी में कार्य करने और ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सभी ने एकजुट होकर शाखा के कार्य और राजभाषा लक्ष्यों को उत्कृष्टता के साथ पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई।

इसके साथ हिंदी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

झलकियाँ

****